सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● डॉ. भारती वर्मा 'बौड़ाई'

सृजक-सृजन-समीक्षा

डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई का परिचय

नाम-डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माता का नाम-श्रीमती कमला वर्मा
पिता का नाम-श्री बाबूराम वर्मा
जन्मतिथि---04 अक्टूबर1957, देहरादून
वर्तमान और स्थायी पता-मकान न०95,
ब्लॉक--H, दिव्य विहार, डाँडा धर्मपुर,
P.0.नेहरुग्राम, देहरादून--248001 (उत्तराखंड)
Email--bharati.bourai007@gmail.com
शिक्षा---एम०ए० (हिंदी साहित्य), बी०एड०, डी०फिल०(गद्यकार बच्चन:एक आलोचनात्मक अध्ययन---विषय पर शोध द्वारा)
व्यवसाय--24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 में स्वैच्छिक सेवनिवृत्ति लेने के बाद स्वतंत्र अध्ययन-लेखन।
प्रकाशन विवरण--
1--पुस्तकें---1--कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985
2--बच्चन साहित्य:अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998
2---साझा संग्रह-----फुलवारी, रूपायन, भोर का तारा, भारत की प्रतिभाशाली कवयित्रियाँ, भारत के प्रतिभाशाली रचनाकार, स्वातंत्र्योत्तर कवि कवयित्रियाँ, प्रेम काव्य सागर, काव्य अमृत, अथ से इति वर्ण स्तम्भ(वर्ण पिरामिड संग्रह), शत हाइकुकार साल शताब्दी, अखिल भारतीय काव्यधारा, काव्यगंगा पत्रिकाएँ (जिनमें कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ,कहानी प्रकाशित हुई है) भाषा, गगनांचल, नवनीत, कादम्बिनी, बालभारती, अकेला, नालंदा दर्पण, देवदीप, वैनगार्ड, सानुबंध, ज्योत्सना, संधान, गौरदर्शन, दून दर्पण, अभिनव प्रत्यक्ष, अवध पुष्पांजलि, नैणसी, क्रांतिमन्यु, विप्लव, विश्वज्योति, भोजपुरी लोक, संग्राम बटोही, मुक्तकंठ, पालिका समाचार, भागीरथ, संस्कृति, विशाखा, विचार बोध, दैनिक हिंदुस्तान, पंचवटी संदेश, कथाबिंब, कुरुक्षेत्र, आर्यमित्र, आदर्श कौमुदी, आदिवासी, स्टीलसिटी समाचार, उन्मुक्त, रक्सौल चेतना, अंजुरि, गंध, रंभाज्योति, लोकसूचक, भाववीथिका, बारामासा, डाँडी-काँटी, सदभावना दर्पण, नारी अस्मिता, क्रांतिस्वर, भारतीय उद्देश्य, जयश्री पत्रिका, नया

आकाश, अरुण नागरी, अंचल भारती, छत्तीसगढ़ पत्रिका, तिब्बत बुलेटिन, भिलाई संदेश, राष्ट्रदेव, हिमालय हुँकार, संकल्य, अमर जगत, प्रसन्न राघव, शैल, प्रयास, वन्यजाति, वन अनुसंधान पत्रिका, आनंद प्रवाह, हस्ताक्षर(ई पत्रिका), अटूट बंधन(ब्लॉग), सच का हौसला(ब्लॉग), लोकजंग, दैनिक ख़बर वाहक—में कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ,कहानी प्रकाशित।

संपादन---1--प्रवाह (विद्यालय पत्रिका)

2--आदर्श कौमुदी(मासिक पत्रिका बिजनौर) के गंगा विशेषांक का संपादन।

अनुवाद---1--डॉ.रमण शांडिल्य, संपादक--अरुण नागरी(त्रैमासिक), की बज्जिका कविताओं का अनुवाद "सदभावना दर्पण" (मध्यप्रदेश) और "अंचल भारती"(उत्तर प्रदेश) में प्रकाशित।

सम्मान----1--अखिल भारतीय हिंदी प्रसार प्रतिष्ठान महेन्द्रू, पटना द्वारा "काव्यालंकार" की मानद उपाधि से सम्मानित।

2---भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा वीरांगना सावित्री बाई फुले फ़ेलोशिप सम्मान--2001

3--अरुणाचल नागरी संस्थान ईटानगर द्वारा हिंदी साहित्य सेवा के लिए सम्मानित।

4--भारतीय वाङ्गमय पीठ, साहित्यिक संस्था, कोलकाता द्वारा " युगपुरुष स्वामी विवेकानंद पत्रकार-रत्न सारस्वत सम्मान" से सम्मानित--2016

5--जे एम डी पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा " नारी गौरव सम्मान " , "प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान" , "प्रेम सागर सम्मान", "अमृत सम्मान" से सम्मानित--2016, हिंदी सागर सम्मान--2017, नारी भूषण सम्मान--2017

6--साहित्यिक योगदान के लिए वाणिज्यमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा सम्मानित--2016

7--आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा, रामपुर, भारत द्वारा "काव्यप्रज्ञा" सम्मान से सम्मानित--2016, श्रीमती शोभा 'आनंद'स्मृति सम्मान-2017, साहित्य-मनीषा सम्मान-2017

8--साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा "हिंदी विभूषण" सम्मान से सम्मानित

9--श्री गोविंद हिंदी सेवा समिति (पंजी०) मुरादाबाद उ०प्र० द्वारा "हिंदी भाषा रत्न" सम्मान-2017

10--उम्मीद की किरण-साहित्य मंच, आदिपुर, कच्छ, गुजरात द्वारा " साहित्य तुलसी सम्मान-2017

फेसबुक पर---अटूट बंधन, साहित्यकार संसद, विश्व हिंदी संस्थान कनाडा, विश्व हिंदी

रचनाकार मंच, एक मुट्ठी आसमान, अंतरा शब्द शक्ति, निर्झरिणी, साहित्य अमृत, आनंद साहित्य पीडिया, प्रयास, jmd publication poetess club, आध्यात्मिक काव्यधारा संस्था ,रामपुर, साहित्य अमृत समूह की सदस्य और इनमें सक्रिय लेखन। संस्थाओं से संबद्धता---1--मधुश्री साहित्य संगम महिला संस्था, देहरादून में कोषाध्यक्ष। 2---"आनंद प्रवाह"पत्रिका की उपसंपादक ।

आत्मकथ्य

मेरे पापा बच्चन जी के गीतों को गुनगुनाया करते थे। उन्हीं को सुनते-सुनते कब साहित्य प्रेम विकसित हो गया पता ही न चला। स्पष्ट कहूँ तो साहित्य प्रेम मुझे अपने पापा से विरासत में मिला।उनका पुस्तकों-पत्रिकाओं का विशाल संग्रह था (जो अब भी मेरे संरक्षण में है), उसमें से ढूँढ-ढूँढ कर अपनी रुचि की पुस्तक-पत्रिकाएँ पढ़ने में लगी रहती। विशाल भारत, सरस्वती, कल्याण पत्रिकाएँ आया करती थीं, साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, कादंबिनी, नवनीत, राष्ट्रधर्म, सारिका,पराग,चंदामामा, नंदन भी आते थे।इस वातावरण में और पापा को निरंतर लिखते-पढ़ते देखते हुए मैं भी पापा के साहित्यिक रंग में रंगने लगी और शब्दों के मध्य विचरती हुई डायरी में अपनी भावनाओं को आकार देने लगी, पर दिखाती किसी को नहीं थी।

जब अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापिका के रूप में कार्य करने पहुँची.....तो वहाँ मेरी कविता ने अपने पंख खोल कर उड़ान भरनी शुरू की।

एक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन का सिलसिला आरंभ हुआ। इसमें व्यवधान तब आया जब मैं स्वैच्छिक सेवनिवृत्ति लेकर देहरादून आई। माँ-पापा के साथ पलों को जीने में लगी रहती पर कुछ भी लिख नहीं पा रही थी। और फिर मेरे जीवन का सबसे कठिन समय आया जब २०११ में मैंने पौने दो महीने के अंदर ही अपने माँ-पापा दोनों को सदा के लिए खो दिया। आशीर्वाद कवच छूट जाने के दुःख ने फिर लेखनी को थामा। ऐसा लगता मानो पापा कह रहे हों....मेरी साहित्य की विरासत संभालते हुए तुम्हें अब रुकना नहीं है, उठो, चलो और चलती रहो। हम सदा तुम्हारे साथ हैं। तो बस उन्हें सदा अपने साथ अनुभव करते हुए अपनी लेखनी के साथ यात्रा पर हूँ, जिसमें माँ-पापा की प्रेरणा और आशीर्वाद के साथ बहुत से साहित्य से जुड़े मित्रों का साथ और प्रेरणा भी है साथ ही पति और बच्चों से अनवरत मिलने वाला अमूल्य-निस्वार्थ सहयोग,उत्साहवर्धन और साथ भी है। **मेरा सृजन** अकेलेपन और भीड़ से एकाएक निकल कर धीरे-धीरे स्वयं तक पहुँच कभी मौन तो कभी मुखर हो स्वयं से आरंभ हो दूसरों तक पहुँच कर संवाद करने की प्रक्रिया है मेरे लिए मेरा सृजन।

"सृजक का सृजन"

तुम देख रही हो न!

छह वर्ष पूर्व
आज ही के दिन की
समृतियाँ सजीव हो
आंखों के सम्मुख
व्यथित कर रही हैं मुझे
जब हर काम के लिए
मुझे प्रतिपल
पुकारने वाली
मेरी माँ
प्राणहीन हो
भूमि पर
चुपचाप लेटी थी
आँखों में आँसू भरे पिता
तुम्हें अंतिम विदाई देने की
पारंपरिक रीतियाँ
विह्वल हो निभा रहे थे
और मैं जी भर कर
तुम्हें देख अपनी
आँखों में समेट लेना चाहती थी
तुम्हारी विदाई करके माँ
आज भी उसी मोड़ पर
खड़ी हूँ एकाकी
चुपचाप तुम्हारी स्मृतियों में
खोई हुई मैं
तुम देख रही हो न!

ओ पिता!

ओ पिता!
तुम प्राण
इस घर के!

शीश पर
ममता की छाँव
दुःख-क्षणों में
नियत ठाँव
ओ पिता!
तुम अरमान
इस घर के!

दी ये दुनिया
रंग-बिरंगी
शक्ति बन चले
साथ मेरे
ओ पिता!
तुम स्वाभिमान
जीवन के!

सरस्वती का
वास तुमसे
रुदन-हास
सबकुछ तुम्हीं से
ओ पिता!
अमिट वरदान
इस घर के!

तुम गए क्या
रूठी खुशियाँ
ढूँढती चतुर्दिक
मेरी अँखिया
ओ पिता!
खो गए कहाँ
इस घर से!

बचपना सँवरा
तुम्हारे बचपने से
राग-रंग बिखरे
तुम्हारी मुस्कान से
ओ पिता!
तुम अभिमान
इस घर के!

देह नहीं बस
पर तुम यहीं हो
दिखते नहीं
पर मुझमे बसे हो
ओ पिता!
मुझमें बसे
तुम प्राण इस घर के!

बादलों के शहर में

अपने
शहर से निकल
विमान में
सवार हो
उड़ते हुए
बादलों के शहर में
प्रवेश कितना
मनमोहक लगता है
कहना असंभव।
धुँए की तरह
विमान की
खिड़की को छूकर
जाते हुए बादल
ऊँचाई पर
जाते-जाते
पल-पल
रूप बदलते बादल
रुई के छोटे-छोटे
टुकड़ों में फैले बादल
मानो की हो किसी ने
रुई की खेती वहाँ
और ऊँचे पहुँचने पर
दिखता अलग ही रूप
भिन्न-भिन्न
आकारों में बनी
मानवी, पशु, पुष्प
और भी न जाने
क्या-क्या

लगती जैसे
आराम से सोई हों वहाँ
न कोई हलचल
सब शांत, स्थिर
चिर शांति का साम्राज्य
और फिर
धीरे-धीरे
नीचे की और
उतरता विमान
बादलों की अठखेलियाँ
जारी बदस्तूर
कुछ कहते
कुछ सुनते से
और कुछ छिपाते से
करते हैं प्रतीक्षा
किसी अगले
विमान के आने की
जिसकी खिड़कियों से
झांकेंगी कई जोड़ी आँखें
निहारेंगी उन्हें
बदलते उनके
आकारों को देख कर
होंगी रोमांचित
मेरी तरह
करेंगी उनसे
कुछ कानाफूसियाँ
करेंगी वादा
फिर मिलने का।

मौसियाँ

माँ के
न होने पर
माँ सी
मौसी होने का
कितना सुख होता है
ये जाना
तुम्हें पाकर
अपनी मुस्कराहट से
हर लेती हो
गहराइयों में
छिपा मेरा दुःख
बदल देती हो
अपने जादू से
जाड़ों की खिलती
गुनगुनी धूप में
सुन लेती हो
मेरी अनकही
वो बातें भी
जिन्हें ताले में
बंद कर चाबी भी
कहीं ऐसे ही
रख छोड़ देती हूँ
कैसे करती हो
ये सब
मुझे गले से लगा कर
अपने जादुई
स्पर्श से
कि लगने लगता है
सब हल्का
एकदम रुई सा
तुम्हारी ममता
मुझे छूती है जब भी
चंदन सी महकने
लगती हूँ मैं
और सोचने लगती हूँ
माँ और मौसियाँ
कहाँ से
और कैसे
सहेज कर
रखती है ममता की
अथाह पूँजी
जिसमें से
थोड़ा-थोड़ा लेकर
उर्जित होती रहती हैं
बेटियाँ जीवन भर।
द्रौपदी के
अक्षय पात्र सी
होती हैं
मौसियाँ,
माँ के साथ भी
माँ के बाद भी
सिर पर हाथ रख
बेटियों को दुलारती हैं
मौसियाँ।

चल साथी...

चल साथी
बंजर धरती में
बोये बीज खुशी के
सूखी धरती
नित राह देखती
कब बादल देगा पानी
मनुज स्वार्थी
अपने में ही गुम
बरबाद कर रहा पानी
धरती पूछे
आयेंगे कब क्षण
अपनी हँसी-खुशी के
धूप मिली
रास्ते में मुझको
अलसायी आँखें मींचे
आगे बढ़ती
सँग हवा के
पर खुशबू पीछे खींचे
चल साथी
खोई खोई धूप को
सपना देकर देखें
नदिया बोली
पास मेरे भी
कभी तो तुम आओ
व्यस्तता के झूठा बोझ लिए
मत इतना इतराओ
चल साथी
नदिया की भी कुछ
गाथा सुन कर देखें
पर्वत की भी
पीर है अपनी
कोई न सुनने वाला
जो जाये
अपनी ही धुन में
बस आनंद उठाने वाला
चल साथी
पर्वत सँग बैठ
उसे कुछ धीर बँधायें मिलकर
रंगों, शब्दों
मौन की भी है
एक अलग ही दुनिया
पशु-पक्षी
हैं जहाँ विचरते
वहाँ भी हैं गलबहियाँ
चल साथी
अपनी दुनिया से
बाहर निकल कर देखें
एकरसता ने
किया बसेरा
जाने कब से सूने मन में
कब से कोई
लहर न आई
जीवन की नदिया में।
चल साथी
मिलकर जीवन में
कुछ पंगा लेकर देखें।
कुछ चंगा करके देखें।

किताब

छोड़ो सवाल जवाब अपने
थोड़ा कहा ज़्यादा समझना

लगूँ जब भी किताब जैसी
पढ़ कर उसे सीने पे रखना

दूरियाँ कब मायने रखती
गीतों में अपने ज़िंदा रखना

रोज़ पढ़ना यों थोड़ा थोड़ा
अलमारी में न सजाए रखना

मैं हूँ मचलती हवा जैसी
समेट कर तालों में रखना

बात है बिलकुल ज़रा सी
किताब सा मुझको पढ़ना

हमसफ़र बन चलना हमको
हाथ मेरा तुम पकड़े रखना।

धीरे-धीरे

अपनी कोशिश रहे ज़ारी हमेशा
भले रंग लाएगी ये धीरे-धीरे

हवा लिख रही ख़त मेरे नाम पर
पढ़ूँगी इसे मैं मगर धीरे-धीरे

हवा चल पड़ी ग़ौर करना सभी
बदलेगा मंज़र मगर धीरे-धीरे

है हाथ सर पर तेरा जाने कब से
अपनी तो आदत खुलेंगे धीरे-धीरे

अब बीच में कैसे रुक जाएँ हम
चलना ही सीखा जब धीरे-धीरे

हो मत परेशाँ अंधेरों से इतना
देख रोशनी आ रही धीरे-धीरे

हवा दौर बदलेगी जब-तब सदा
अपना रूख बदलना तुम धीरे-धीरे

"सृजन की समीक्षा"

1.

आदरणीय भारती जी,

केन्द्रीय रचनाकार के तौर पर आपका हार्दिक अभिनंदन है |

पीर से उपजे साहित्य में प्रेम तत्व अधिक होता है और जब प्रेम का स्वरूप वात्सल्य हो और जिसमे माँ और पिता के स्नेह की छाँह समाहित हो वहाँ काव्य के अदभुत सौन्दर्य के दर्शन होते है| जैसा आपके काव्य में दृष्टिगत है | अरुण के आंचल में काव्य का उड़ान भरना और फिर वहाँ से लौट आने पर थमना एक पक्षी की दिनचर्या से प्रेरित है जहाँ सवेरा होते ही आकाश की ओर पक्षी निकल पढ़ते है और शाम ढलते ही लौट आते है अपने घरौंदो पर... खैर आपके साथ परिस्थिती गत यह हुआ और आपने हार न मान कर पिता को सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पण की है |

1. तुम देख रही हो न!

माँ, न केवल एक रचना है बल्कि यथार्थ के आलौक में रची गई एक भावना है |

बहुत सुन्दर सृजन, पहली ही गेंद पर छ: रन |

2. ओ पिता!

मार्मिक, हृदय स्पर्शी और पितृप्रेम का सहज चित्रण... सुन्दर...

सदैव पितृसत्ता का उत्तराधिकार आपका हो...

3. बादलों के शहर में

विमान यात्रा का अच्छा वर्णन.. मेघा लय ही बन जाता

4. मौसियाँ

वाह... सुन्दर चित्रकल्पना, माँ-सी

मौसी के रिश्तें पर बहुत कम ही लिखा गया है... आपने अदभुत चित्र उकेरा |

5. चल साथी

सुंदर शब्द चयन परन्तु और गहराई अपेक्षित है | भाव टूट रहे है...

6. किताब

जिस आदत का जिक्र किया वो तो सच में नदारद हो गई,

किताबों की जगह मोबाईल ने ले ली |

खैर, यादें ताजा कर दी आपने.... सुन्दर रचना |

7. धीरे-धीरे

बेशक कश्यप गति ही सही पर जीत की लहर तो आएगी ही...

बहुत सुन्दर रचनाएँ.... कविता लेखन का कारण जानकर प्रसन्नता हुई |आप स्वस्थ्य रहे, उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर पहुँचे, यही शुभेच्छा है |हमेशा हिन्दी सेवा में ऐसे ही जुटे रहें, यही विनती है |उत्कृष्ट लेखन | सादर धन्यवाद...

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

2.

संगी का मुझे संगी कहना मेरे लिए हर सम्मान से बड़ा सम्मान है उनकी रचना पर मुझे कुछ भी कहने का हक़ नहीं है क्यों कि वे प्रसिद्ध साहित्यकार हैं और मैं साधारण पाठक... पाठक होना और केवल पाठक होना जारी था कि प्रीति बहना का आदेश हुआ संगी की रचना पर कुछ कहूँ... उलझन में रही कि क्या कहूँ पढ़ मानसिक सन्तुष्टि होना और समीक्षक होना अलग अलग बात है... तब तक संगी का भी आदेश... अब... संगी जरूर समझेंगी परिस्थिति को

तुम देख रही हो न!

माँ को खोने का क्या एहसास होता है उस लड़की से एक बार जानने का कोशिश कीजियेगा संगी जिसकी शादी तय करते-करते अकेले मुक्ति धाम चली जाती है तुम्हारी विदाई करके माँ आपकी संगी आज भी वहीं खड़ी है स्वर को शब्द देने के लिए शुक्रिया संगी,.....

2. ओ पिता!

सजीव चित्रण हर पिता की... आपके पिता के बारे में कुछ जानने का मौका भाई पुष्करणा जी से बातों के क्रम में भी चला...

माँ सा पूत,...पिता सी पुत्री
भाग्यवान समझे जाते,...आप सार्थक कर दीं

3. बादलों के शहर में

वाह बेजोड़ वर्णन हवाई यात्रा का.. आपकी रचनायें मेरे भावनाओं को चित्रित कर रहे सुंदर भावाभिव्यक्ति

4. मौसियाँ

गज़ब की मगर सच्ची भावना .. रिश्तों को बख़ूबी आपने समझा और उसकी व्याख्या भी खूबसूरती की हैं

5. चल साथी

प्रकृति के लिए पानी की महत्ता
प्रकृति की महत्ता मनु के लिए

बड़े ध्यान से पढ़ना पड़ा संगी आपकी इस रचना को ... सच कहें तो आपके इस रचना का चयन ही आपके लेखनी के साथ न्याय हो पाया...

6. किताब

वाह क्या अंदाज़ है बिल्कुल जुदा अपनी तुलना किताब से करना... सदा यूँ ही रहिएगा एक दिन शोध में आपका व्यक्तित्व शामिल होगा

7. धीरे-धीरे

शामिल हो गई आप हर वक्त बचाव में मेरे धीरे-धीरे
धैर्य रख पाई हूँ तन खड़ी रही मैं सदा धीरे धीरे
आपकी लेखनी सशक्त है चयन की तारीफ़ करना लाजमी है,....सादर

विभा रानी श्रीवास्तव

आदरणीया भारती जी..
नमन एवं प्रणाम..
सब से पहले तो माफ़ी कि आप की रचनाओँ पर काफी देरी से प्रतिक्रिया कर रहा हूँ..पर में करूँ भी क्या..पहले तो आप का सम्मान और आत्म कथा में वक़्त चला गया..फिर आप की सारगर्भित रचनाओं में..!!!!
फिर सोचा में अदना सा.. कैसे पहाड़ जैसी रचनाओँ पर प्रतिक्रिया करूँ.?? फिर अंततः हिम्मत कर के आ ही गया.. सब से पहले तो आप को इतने सम्मान और गौरवशाली यात्रा के लिए बधाई..और आगे की अग्रसर यात्रा के लिए शुभकामना..
तुम देख रही हो न..से लेकर धीरे धीरे..व्वाहः व्व्वाह व्व्वाह व्व्वाह
और मोसियाँ..वाह दिल को छू गयी
धीरे धीरे हो या किताब.. एक बात जरूर है..आप की लेखनी विषय केंद्रित ही नहीं अपितु सशक्त भी है..भावों की सटीक अभिव्यक्ति..
जैसे ओ पिता..लाजवाब
में तो निशब्द हूँ..और कैसे प्रतिक्रिया दूँ..समझ नही आ रहा है..
इसलिए कलम उर्फ की पेड़ को विराम देता हूँ..और उम्मीद करता हूं आप मेरी भावनाओ को समझ लेंगी.. जहाँ से शुरुआत की वहीं विराम देता हूँ..**नमन एवं प्रणाम**

शीतल खण्डेलवाल

5.-

डॉ. भारती जी का मंच पर भव्य अभिनन्दन। आपका व्यक्तित्व और कृतित्व अत्यंत सराहनीय है। आपकी जन्म और कर्म भूमि दोनों प्राकृतिक सौंदर्यता की गोद में रहे ,

यह आपका सौभाग्य है।काव्य सृजन, सम्मान और पुरस्कार आपकी उपलब्धियों के साक्ष्य हैं।**पिता की काव्य विरासत और परिवेश ने आपको और समृद्ध किया।** आपकी रचनाएँ सभी सराहनीय हैं। माँ का वियोग हृदय को झकझोर देता है। जीवंत दृश्य यथार्थ को प्रकट कर रहा है। फिर ....माँ के बाद पिता का साया भी हट जाना कुठाराघात है। **पिता की रिक्तता को अनुभूत कराती सौम्य करुण कविता।** बादलों का सुन्दर संसार ....और माँ .....जैसी मौसी को चित्रित करती .....चल साथी में प्रकृति का सुन्दर समन्वय .....और अंत में क़िताबों में रची समग्रता को उकेरती कविताएँ। एक से एक बढ़कर रचनाएँ , रचना शिल्प और भाव विधान की कथा कहती हैं। आप कविता के लिए और कविता आपके लिए है। सतत काव्य यात्रा में बनी रहें और माँ वीणापाणि का वरदान है आपके लिए। आपको बहुत बहुत बधाई। **शुभ कामनाएँ।**

प्रदीप सोनी शून्य

6.

भारती दी, जब भी आपसे मिली आपके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण खुद के लिए महसूस किया, **आपका स्नेह और आशीर्वाद मेरे लिए पूंजी है**, आपका आत्मकथ्य आपसे एक अनदेखा रिश्ता स्थापित करता है, आपका जीवन परिचय स्वतः ही प्रेरणा का संचार करता है।आपकी रचनाओं में

तुम देख रही हो न! **वात्सल्य से परिपूर्ण रचना** *ओ पिता* **तुम मुझमें बसे, प्राण इस घर के, आपके समर्पण को प्रदर्शित करती रचना** *बादलों के शहर में* **सरल शब्दों में भीतर प्रेम की हिलोरें महसूस करवाती रचना** *मौसियाँ* **जीवन मे रिश्तों के महत्व को दर्शाती रचना** *चल साथी* **मिलकर जीवन में कुछ पंगा लेकर देखें, गज़ब का आत्मविश्वास दर्शाती रचना** *किताब* **जीवन में सबसे विश्वसनीय साथी इस सच को दिखलाती रचना** *धीरे-धीरे* **आशाओं का एक सुंदर दीपक, सतत आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रचना।**

आपकी सभी रचनाओं की विशेषता

अभिधा में कही बात, भावों की प्रधानता, वास्तविक जीवन के बिल्कुल करीब, सधी हुई भाषा,सहज शब्दशैली, सुंदर कथानक और प्रेरक कथ्य

आपके स्वास्थ्य और सुंदर साहित्यिक यात्रा के लिए मंगलकामनाएँ, सदैव आपके स्नेहाषीश की आकांक्षी,...

प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दी ग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com